इल्तुतमिश का मकबरा :

इल्तुतमिश द्वारा इस मकबरे का निर्माण कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद के समीप 1235 ई० में करवाया गया। मकबरे में बने गुम्बदों में चुनावदार पत्थर के टुकड़ों का प्रयोग किया गया है। गुम्बद के चौकोर कोने में गोलाई लाने के लिए स्क्वीच शैली का प्रयोग किया गया है।

इल्तुतमिश द्वारा निर्मित अन्य भवन हैं :

(क) हौज-ए-शम्सी,
(ख) शम्सी ईदगाह एवं
(ग) जामा मस्जिद।

मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह इल्तुतमिश ने निर्मित करवाया तथा अलाउद्दीन खिलजी के समय इसका विस्तार हुआ। प्रारंभिक काल की वास्तुकला शैली का चरमोत्कर्ष बलबन के मकबरे में दिखाई देता है।

शासन व्यवस्था :

इल्तुतमिश मध्यकालीन भारत के महान शासकों में से एक था। मिनहाज के अनुसार "उसकी सुन्दरता, बुद्धिमत्ता और कुलीनता का मुकाबला नहीं था।" वह लिखता है, "इतना परोपकारी, सहानुभूतिपूर्ण और विद्वानों तथा बुजुर्गों की इज्जत करने वाला कोई भी ऐसा राजा नहीं हुआ जिसने अपने प्रयास से राजगद्दी प्राप्त की हो।"

ए०बी० एम० हबीबुल्ला के अनुसार, "ऐबक ने दिल्ली सल्तनत की सीमाओं और उसकी संप्रभुता की रूपरेखा बनाई। इल्तुतमिश, निस्संदेह उसका पहला सुल्तान था।" उसमें रचनात्मक प्रतिभा का जबरदस्त ज्ञान था जिसके आधार पर 26 वर्ष की निरंतर राजनयिक और सैनिक गतिविधियों के बाद उसने दिल्ली सल्तनत की रूपरेखा बनाई।

के०एम० निजामी के शब्दों में, "ऐबक ने दिल्ली सल्तनत की रूपरेखा के बारे में केवल दिमागी खाका बनाया था, इल्तुतमिश ने उसे एक व्यक्तित्व, एक पद, एक प्रेरणा शक्ति, एक दिशा, एक शासन-व्यवस्था और एक शासक वर्ग प्रदान किया।" अपने परिश्रम और दूरदर्शिता से वह अपने राज्य को संगठित कर सका।

आर० पी० त्रिपाठी के शब्दों में, "भारतवर्ष में मुस्लिम प्रभुसत्ता का वास्तविक श्रीगणेश उसी से होता है।"

अपने शासन के अन्त में इल्तुतमिश ने दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था के निर्माण की ओर ध्यान दिया। उसके काल में इक्तादारी प्रथा का विकास हुआ। इक्ता का अर्थ था — नकद वेतन के बदले कृषि योग्य भूमि का लगान हस्तांतर करना। उसने अरबी प्रथा

के आधार पर एक नई मुद्रा प्रणाली भारत में लागू की। इसमें ताम्बे के सिक्के अथवा जीतल और चांदी के सिक्कों अथवा टंकों का प्रचलन हुआ। इन सिक्कों पर इल्तुतमिश का नाम अरबी लिपि में अंकित था। उसने तुर्कान-ए-चाहलगानी या 'चालीसा' नामक अमीर वर्ग का गठन किया।

इल्तुतमिश कला और संस्कृति का भी पोषक था। उसके दरबार में प्रसिद्ध इतिहासकार मिनहाज-उस-सिराज को संरक्षण मिला जिसकी रचना तबकात-ए-नासिरी से भारत में तुर्की शासन के निर्माण और आरम्भिक इतिहास का पता चलता है। प्रसिद्ध विद्वान जुनैदी इल्तुतमिश का प्रधानमंत्री था। उसने अनेक भव्य इमारतों का भी निर्माण कराया जिसमें कुतुबमीनार, राजकुमार महमूद तथा इल्तुतमिश के मकबरे और शम्सी मदरसा प्रमुख हैं। इल्तुतमिश ने ही राजधानी, लाहौर से दिल्ली, स्थानांतरित किया।

इल्तुतमिश के उत्तराधिकारी :

30 अप्रैल 1236 ई० में इल्तुतमिश की मृत्यु हो गयी। इसके बाद के 30 वर्ष का इतिहास सुल्तानों और अमीरों के बीच सत्ता के अधिकार के लिए संघर्ष का इतिहास है। इस काल की दो विशेषताएँ हैं :—

: ① इल्तुतमिश के उत्तराधिकारियों का दुर्बल होना
② तुर्की अधिकारियों की महत्वाकांक्षाएँ।

इन 30 वर्षों में इल्तुतमिश के वंश के पाँच शासक सिंहासन पर बैठाए गए और बाद में पदच्युत करके मार डाले गये।